315hi22

22

19वीं शताब्दी का महत्त्व

जब हमें पुस्तकों, फिल्मों, दूरदर्शन अथवा बुजुर्गों द्वारा बताई गई कहानियों के माध्यम से अतीत के बारे में जानकारी मिलती है। तो हमें अन्य युगों और अपने काल के बीच अनेक विभिन्नताएं और समानताएं दिखाई देती हैं। हमें मालूम है कि अनेक भौतिक वस्तुएं और प्रौद्योगिकियां, जिनका हम आज उपयोग करते हैं, वे 1900 में मौजूद नहीं थी अथवा उस समय बहुत कम लोग उनका उपयोग करते थे। फिर भी मानव जीवन के संगठन के रुप में हम वर्ष 1900 के लोगों से बहुत अधिक समान है। इस इकाई में हम चर्चा करेंगे कि 1900 में विश्व के विभिन्न भागों में लोग कैसे रहते थे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- 1900 में विश्व के विभिन्न प्रदेशों में जनसंख्या के रुप की कल्पना कर सकेंगे;
- पूंजीवादी औद्योगीकरण को परिभाषित कर सकोगे और इसके सामाजिक परिणामों को समझा सकेंगे;
- उपनिवेशवाद के संबंधों की व्याख्या कर सकेंगे;
- ऊर्जा और संसाधन उपयोग के आधुनिक ढ़ाँचे की कल्पना कर सकेंगे और
- आधुनिक राजनीतिक विचारधाराओं और संघटनों के उद्‌गम का विश्लेषण कर सकेंगे।

22.1 विश्व जनसंख्या की संरचना : 1900

मानव जनसमुदायों, उनकी विकास दरों और आवासों के बदलते रुप का अध्ययन जनसांख्यिकी कहलाता है।

सन 1900 में मानव जनसंख्या लगभग 150 करोड़ थी। आज की तरह उस समय भी चीन और भारत सबसे अधिक जनसंख्या वाले देश थे। फिर भी आज की अपेक्षा सन 1900 में विश्व की जनसंख्या का कम भाग एशिया में निवास करता था। समग्र विश्व के ज्यादातर लोग सन 1900 में कृषकों के रुप में बस गए थे, ये फसलें उगाते और पशु

पालते थे तथा गांवों में रहते थे। विश्व के अनेक भागों में लोग खानाबदोश थे, वे पशुओं के समूहों को चराते थे और कई आदिवासी शिकार--खाद्य संग्रहकर्ता थे, हालांकि कई सौ वर्षों पूर्व की तुलना में सन 1900 में वे बहुत कम थे।

विश्व की जनसंख्या का लगातार बढ़ता भाग शहरों में निवास करता था। विश्व के कई भागों में प्राचीन कालों से शहर मौजूद थे, परन्तु इनका आकार और जनसंख्या सीमित थी। तथापि पूंजीवादी औद्योगीकरण से शहरीकरण हुआ और शहरों में जनसंख्या तेजी

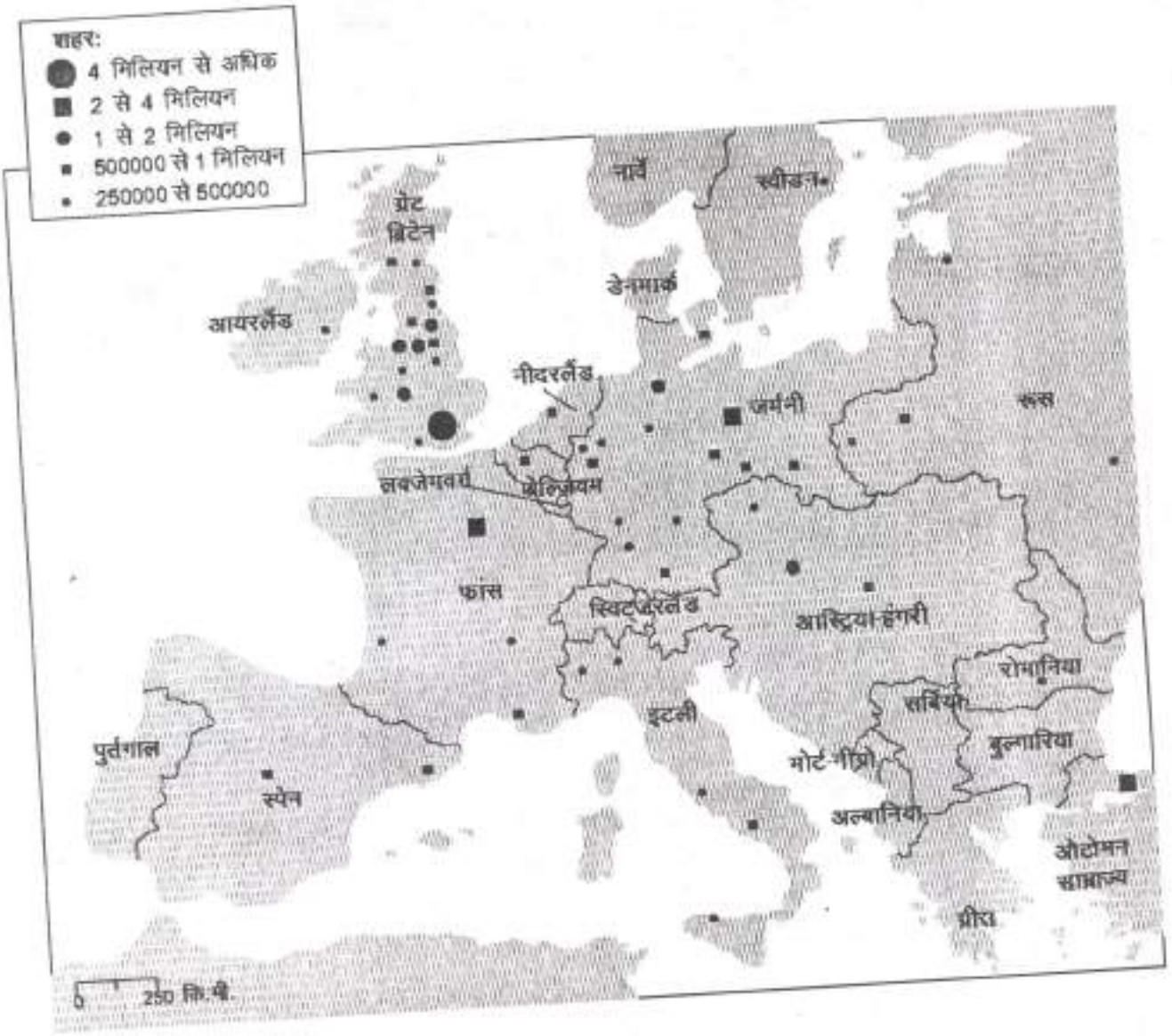

मानचित्र 22.1 (अ) प्रारंभिक 20वीं सदी के यूरोप में शहरीकरण

आपकी टिप्पणियाँ

से बढ़ी। सन 1900 तक यूरोप में विश्व के अन्य प्रदेशों की तुलना में शहरों का घनत्व बढ़ा। सौ से अधिक शहरों में कम–से–कम 1,00,000 लोगों की जनसंख्या थी और छह यूरोपीय शहरों में प्रत्येक में लगभग 10,00,000 लोग रहते थे। यूरोप और अमरीका में सबसे बड़े शहर थे, जबकि एशिया तथा अफ्रीका में ऐसे बड़े भूभाग थे, जिनमें कुछ ही शहर थे और सैकड़ों वर्षों की तलना में वे अलग–थलग थे तथा कम बसे हुए थे। सन

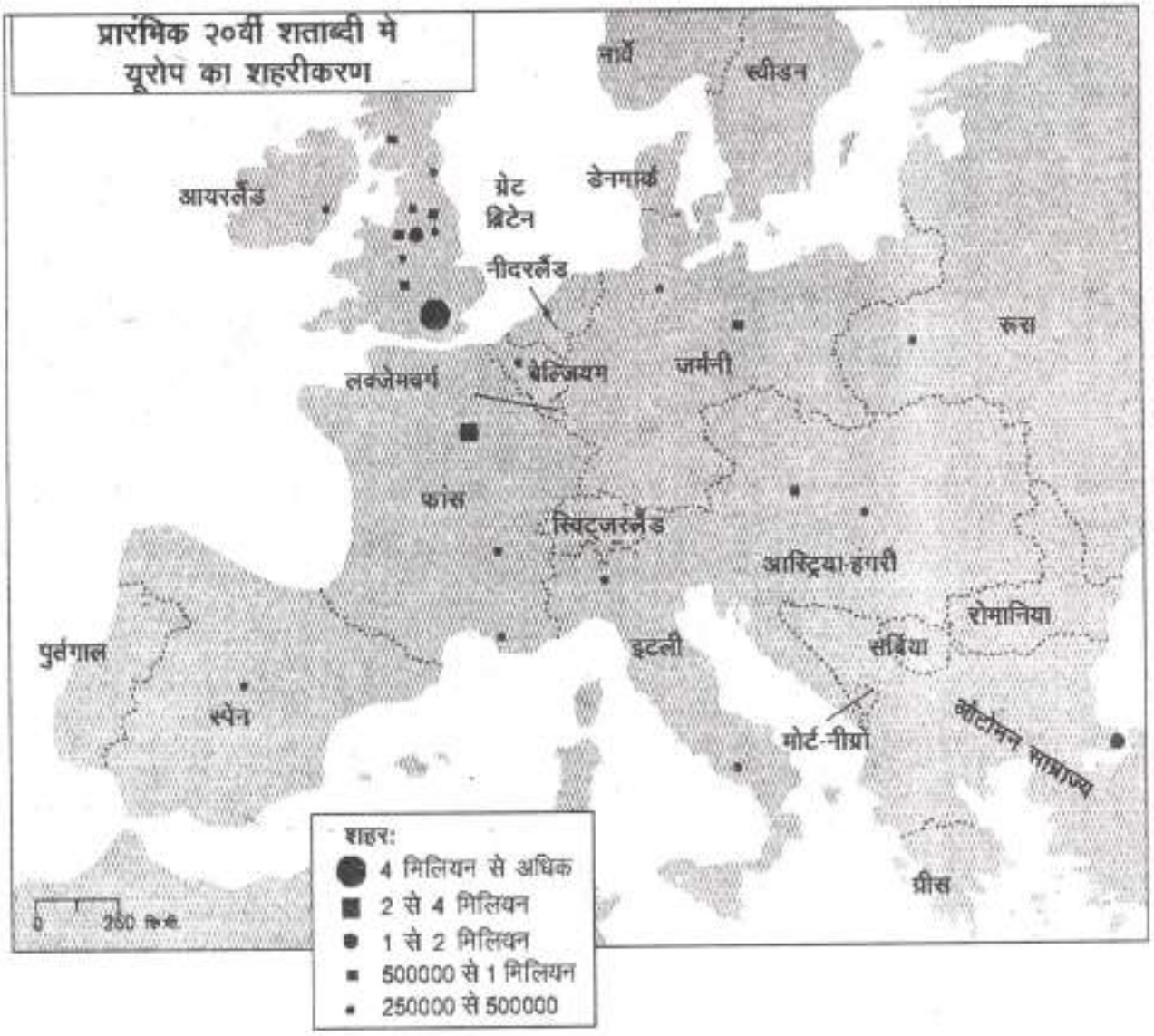

मानचित्र 22.1 (ब) प्रारंभिक 20वीं सदी के यूरोप में शहरीकरण

आपकी टिप्पणियाँ

1900 में यूरोप से बाहर के ज्यादातर बड़े शहर जैसे सिडनी और शिकागो 100 या 200 वर्ष पुराने थे तथा इनमें ज्यादातर यूरोप मूल के लोग रहते थे। कुछ शहर जैसे बंगाल में कलकत्ता ब्रिटिश शासन के तहत विकसित हुए।

सामान्यतः सन 1900 में एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमरीका की मानव जनसंख्या में 75–95 प्रतिशत ग्रामीण थे अथवा गांवों में रहते थे और कृषि पर निर्भर थे। औद्योगीकृत यूरोप अथवा अमरीका और ऑस्ट्रेलिया, जहां यूरोपीय मूल के लोग बस गए थी, वे पहले से ही शहरी हो चुके थे अथवा उनकी लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या शहरी थी अर्थात् वे नगरों और शहरों में रहते थे।

22.2 औद्योगीकरण और सामाजिक वर्ग

लगभग सन 1700 के बाद पश्चिमी यूरोप में औद्योगीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। उससे बहुत बड़ी संख्या में श्रमिक धातु का उत्पादन करने के लिए ऊर्जा और संसाधनों वाले क्षेत्रों के निकट आ गए तथा तैयार माल का तेजी से उत्पादन करने के लिए मशीन चलाने लगे। सन 1900 तक जब व्यापक पैमाने पर उद्योग चलाने के लिए भारी धन राशि की आवश्यकता पड़नी शुरु हुई तो पूंजीवादी औद्योगीकरण का विकास हुआ। 'पूंजीवाद' पूंजी शब्द से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ संचित धन और सम्पत्ति है और जिनके पास पूंजी होती है वे पूंजीपति कहलाते हैं। पूंजीपतियों का सीधा संबंध औद्योगिक उत्पादन, व्यापार, प्रशासन और बैंकिंग से होता था। 1900 तक ज्यादातर यूरोप, अमरीका और ऑस्ट्रेलिया में पूंजीवादी औद्योगीकरण फैल गया था।

पूंजीपति यह धन और सम्पत्ति व्यापार और वाणिज्य अथवा छोटे मालिकों की सम्पत्ति के हरण करने से प्राप्त करते थे। दूसरी ओर फैक्टरियों में काम करने वाले पुरुष, महिलाएं और बच्चे थे, जिनके पास कोई संपत्ति नहीं थी और वे अपनी आजीविका के लिए अपनी मजदूरी पर आश्रित थे, जिसके लिए उन्हें निश्चित पगार मिलती था। 1900 में उन मज़दूरी पाने वालों की संख्या अधिक थी, जिनके पास पैसे की कमी नहीं थी, फिर भी उन्हें धनी नहीं कहा जा सकता था। इनमें से कई वेतन भोगी मध्यम वर्ग के लोग थे, जैसे अध्यापक, डॉक्टर, इंजीनियर, क्लर्क तथा अन्य सेवाओं से संबंध रखने वाले लोग।

उस समय बहुत से लोगों का मानना था कि ऐसे वर्गों का होना एक सामान्य बात है तथा ये हमेशा रहेंगे और ज्यादातर लोग इन असमानताओं को तब तक स्वीकार करते रहेंगे, जब तक उनकी स्थिति में सुधार नहीं हो जाता। उन्होंने देखा था कि उपनिवेशों से धन का हस्तांतरण होने से यूरोप के देशों में भी कार्य करने वाले लोगों को कुछ लाभ होता था। 1900 तक कुछ हद तक यह हुआ और ज्यादातर लोग अपने पूर्वजों की तुलना में बेहतर जीवन जीने लगे। लेकिन अभी भी बेरोजगारी की समस्या गंभीर थी।

1900 तक एशिया और अफ्रीका के बम्बई, शंघाई और डकार जैसे शहरों में बड़ी संख्या में व्यापारी, दुकानदार और मध्यम श्रेणी के अन्य वर्ग तथा औद्योगिक वेतन वाले कामगर रहने लगे थे। परन्तु यहां की जनसंख्या में आसपास के गांवों के भूस्वामियों, किसानों और कृषि श्रमिकों की संख्या ही अधिक थी।

1900 के पूंजीवादी समाजों के बारे में कुछ अन्य तथ्यों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए अधिकतर कच्चा माल उपनिवेशों से लाया जाता था

आपकी टिप्पणियाँ

और तैयार माल उपनिवेशों के बाजारों में बेचा जाता था। यह संबंध भी असमानता पर आधारित था: यह कोई समान व्यापार संबंध नहीं था। यूरोपीय समाजों में भूस्वामियों का अधिक दिनों तक वर्चस्व नहीं रहा।

22.3 शहरी विचारधारा और ज्ञान

औद्योगीकरण की अन्य विशेषता थी ३समाज में उत्पादन करना तथा ज्ञान की भागीदारी। लोग शहरी जीवन से पहले की तुलना में और अधिक निकटता से जुड़ गए। शहरों और नगरों में न सिर्फ औद्योगिक वेतन पाने वाले श्रमिकों की संख्या अधिक थी, बल्कि शिक्षा औरसाक्षरता वाले कार्यों में लगे लोगों – क्लर्कों, मैनेजरों, अध्यापकों, सरकारी कर्मचारियों आदि की भी संख्या बढ़ रही थी। शीघ्र ही इस बात को स्वीकार किया जाने लगा कि कार्य कुशलता में पढ़े–लिखे और हिसाब–किताब जानने वाले औद्योगिक कामगारों का भी योगदान होता था। समाचार–पत्रों और पत्रिकाओं ने इसमें योगदान दिया। 1900 में लंदन, पेरिस, बर्लिन और न्यूयॉर्क जैसे शहरों में प्रतिदिन दस लाख प्रतियों से अधिक समाचार–पत्र छपने लगे।

1900 तक ज्यादातर औद्योगिक समाजों के लिए यह आवश्यक हो गया था कि लड़के और लड़कियां कम–से–कम तेरह अथवा चौदह वर्ष की आयु तक प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर लें। विद्यालय में पढ़ाने का कार्य आधुनिक व्यवसाय हो गया था, जिसमें महिलाओं की संख्या अधिक थी। इससे शहरी और ग्रामीण लोगों में ज्ञान और संस्कृति का अंतर आ गया। कुल मिलाकर 1900 तक कुछ पश्चिमी समाजों में प्रौढ़ साक्षरता साठ प्रतिशत और नब्बे प्रतिशत के बीच थी, जबकि गैर–पश्चिमी समाजों में इसका प्रतिशत बहुत कम था।

पाठगत प्रश्न 22.1

1. 1900 में यूरोप से बाहर के जनसमुदायों का कितना भाग गांवों में रहता था?

2. 1900 में विश्व के ज्यादातर बड़े शहर (10,00,000 से अधिक लोग) यूरोप में थे अथवा उससे बाहर?

3. 1900 तक शहरी केंद्रों और ग्रामीण क्षेत्रों में 'साक्षरता अंतर' क्यों था?

4. 1900 के विश्व में उच्च साक्षरता के क्या संकेत थे?

22.4 ऊर्जा और संसाधन उपयोग : विश्व के औद्योगिक बनाम गैर-औद्योगिक क्षेत्र

1900 में औद्योगीकृत और गैर–औद्योगीकृत विश्व में लोगों ने सिर्फ विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन ही नहीं, किया बल्कि उन्होंने ऊर्जा के उपयोग की बिलकुल भिन्न पद्धतियां भी विकसित कीं। 1900 में गैर–औद्योगीकृत विश्व का ज्यादातर उत्पादन मानव और पशु

शक्ति से किया जाता था। अमरीका के खेतों में हल और यांत्रिकी कटाई मशीनें घोड़ों द्वारा चलाई जाती थीं, इसी प्रकार नगरों में ठेला, गाड़ियां और बसें चलाई जाती थीं।

औद्योगिक समाजों को अपनी फैक्टरियां चलाने, अपने घरों और कार्यालयों में रोशनी करने, परिवहन के शक्तिशाली आधुनिक साधनों जैसे रेलवे–इंजन और ऑटोमोबाइल्स चलाने के लिए नए ऊर्जा स्रोतों की आवश्यकता थी। अतः 1900 में ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी व्यापक रुप से कोयले का उपभोग करने वाले समाज थे, जबकि इटली ने जल–विद्युत का उपयोग करना शुरु कर दिया था। अमरीका पेट्रोलियम ईंधनों पर आश्रिम होता जा रहा था। 1915 तक यह स्पष्ट हो गया था कि परिवहन में घोड़ों के स्थान पर कारों का उपयोग होगा।

इन राष्ट्रों ने यह महसूस करना शुरु कर दिया था कि इनकी आर्थिक और राजनीतिक शक्ति ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर थी और इन्होंने अपने उपनिवेशों के संसाधनों का दोहन करना शुरु कर दिया। उदाहरण के लिए ब्रिटिश लोग असम और बर्मा से तेल जुटाते थे; यही कार्य डच लोग सुमात्रा में और अमरीका के लोग मैक्सिको में कर रहे थे। ये घटक इनकी विदेशी नीतियों का निर्धारण करते थे।

22.5 उपनिवेशवाद, आर्थिक ढांचे और सामाजिक संबंध

1900 में पश्चिमी विश्व के ज्यादातर औद्योगीकृत राष्ट्र अपनी सीमाओं से दूर के प्रदेशों पर शासन करते थे अथवा उनको आर्थिक रुप से नियंत्रित करते थे। ब्रिटेन ने भारत के ज्यादातर भागों पर राज्य किया जबकि हालैंड ने आधुनिक इंडोनेशिया के संपूर्ण क्षेत्र पर शासन किया। फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, इटली, पुर्तगाल और बेल्जियम के अफ्रीका, जापान और चीन में उपनिवेश थे।

इन उपनिवेशों के शासकों ने एशिया और अफ्रीका को नवीनतम प्रौद्योगिकियां हासिल करने से वंचित रखा तथा इन्होंने अपने उपनिवेशों में सावधानीपूर्वक रेलवे और टेलीग्राफ पर नियंत्रण रखा। ये स्वतंत्रता की अभिलाषा करने वालों पर सख्ती करते थे। इन्होंने प्रशासन में पहले से उपयोग मे लाई जा रही भाषा के स्थान पर अपनी भाषा लागू कर दी। उन्होंने विदेशी शासन मे औपनिवेशिक समाज के कुछ भागों को सम्मिलित करने के उद्देश्य से कुछ शैक्षिक नीतियां प्रारंभ की। उन्होंने निम्नतर स्तरों पर औपनिवेशिक प्रशासन को चलाने के लिए उनके कुछ भागों को भी तैयार किया। उन्होंने 'फूट डालो राज करो' की नीति अपनाई, आधुनिक आर्थिक क्रियाकलाप के विकास को रोका तथा औपनिवेशिक भाषाओं और शिक्षा का उपयोग स्थानीय भाषाओं में शिक्षितों के बीच भेद करने वे उद्देश्य हेतु किया।

उपनिवेशवाद के प्रभाव और पूंजीवाद के प्रवेश ने उपनिवेशों में सामाजिक संबंधों को बदल दिया। उन्होंने नकदी फसलों, जिसका वे व्यापार करना चाहते थे, के लिए अपनी प्राथमिकताओं में परिवर्तन लाने के लिए उत्पादन के ढांचे में बदलाव किया। निर्यात हेतु उत्पादन के इस प्रतिमान में उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अत्यधिक विस्तार किया गया। उदाहरण के लिए भारतीय किसान अफीम का उत्पादन करते थे जिसे ब्रिटेन के उद्यमी चीन को निर्यात करते थे। भारतीय व्यापारी भी इसमें सम्मिलित थे। दूसरे शब्दों में, उत्पादन और व्यापार दोनों की शासक के हितों में वृद्धि की जाती थी। परिणामस्वरुप

आपकी टिप्पणियाँ

संपूर्ण विश्व के ज्यादातर लोग उन वस्तुओं का उत्पादन करने लगे, जिनका वे उपभोग नहीं करते थे, जबकि वे उन वस्तुओं का उपभोग करते थे जिनका कहीं और अन्यों द्वारा उत्पादन किया जाता था।

ऐसे वाणिज्यिक ढांचों ने शासकों के नियंत्रण के कारण अंतर–निर्भरता और अधीनताएं सृजित कीं। कई क्षेत्रों में किसान पर्याप्त मात्रा में खाद्य पदार्थों का उत्पादन नहीं कर पाते थे जिसके परिणामस्वरुप उन्नसवीं शताब्दी के अंत में आए अकालों के कारण लाखों लोग मरे; यद्यपि अब तक के इतिहास में खाद्य का विश्व में कुल उत्पादन पहले से अधिक था।

पाठगत प्रश्न 22.2

1. 1900 में कौन से देशों ने जीवाश्म ईंधनों का उपयोग करना प्रारंभ किया?

2. 1900 में ऐसी आपूर्ति कहां स्थित थी?

3. क्या 1900 में महाशक्तियों के उपनिवेशों के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का लाभ था?

4. उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में जबकि विश्व में कुल खाद्य आपूर्ति में तेजी से वृद्धि, हुई अनेक लोगों की खाद्य सुरक्षा समाप्त हो गई। क्यों?

5. भाषा के उपयोग तथा शिक्षा में पहुँच बनाने से औपनिवेशिक शासन का क्या संबंध था?

22.6 विकसित और अविकसित राष्ट्रों में विचारधाराओं और राजनीति की गतिशीलता

1900 के विश्व ने समाज के जीवन और संगठन के बारे में विचारों के तीव्र विकास तथा विचारधारा की होड़ अथवा राजनीतिक विचारों की विभिन्न धाराओं को देखा। बड़ी हद तक यह औद्योगीकरण से संबंधित आर्थिक व सामाजिक बदलाव का परिणाम था। छपाई संस्कृति और संचार के अन्य साधनों के आगमन से इन बहसों का व्यापक विस्तार हुआ तथा जनता और संगठन विभिन्न विचारधाराओं का अनुसरण करने लगे। 1900 तक पश्चिमी राष्ट्रों और साथ ही कई उपनिवेशों में प्रिंट मीडिया लोगों की बहुत बड़ी संख्या को उत्पादों और सेवाओं के विज्ञापन संबंधी सूचना उपलब्ध कराते थे, परन्तु साथ ही उनके राजनीतिक विचारों को मूर्त रुप देते थे।

उदारवाद

विचारों के समूह के रुप में उदारवाद का उदय तीन सौ वर्षों से पहले उस समय हुआ था जब कुलीन लोग और बड़ी सम्पत्ति के मालिक (कभी–कभी गरीब लोग भी इसमें

सम्मिलित हो जाते थे) शासकों के अधिकारों को निर्धारित अथवा सीमित करने के लिए संघर्षरत थे। उदारवादियों का मानना था कि व्यक्तियों को 'नैसर्गिक अधिकार' प्राप्त हैं जिनमें उत्पीड़न के विरुद्ध अधिकार, सम्पत्ति संचित करने, धार्मिक स्वतंत्रता, अपने विचारों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करने का अधिकार और अन्य सम्मिलित थे। उनका मत था कि सरकार व शासकों द्वारा इन अधिकारों का सम्मान करवाया जाना चाहिए। इनका मानना था कि इन अधिकारों को सृजित करने और इन्हें लागू करने के लिए सार्वजनिक कानूनों और संविधानों को तैयार करना सर्वोत्तम विधि थी। ये कानून और संविधान शासकों और सरकारी तंत्र द्वारा उपयोग किए गए निरंकुश अधिकारों के विरुद्ध श्रेष्ठ रक्षा उपाय थे। ये राष्ट्रीय चर्चा के माध्यम से अपने लोगों के धार्मिक विश्वासों के अनुसार आदेश देने वाले राजकीय अधिकारियों के प्रति आपत्ति जताते थे, क्योंकि धर्म निजी मामला था। जन आंदोलनों के विकास से उदारवाद को मजबूरन न सिर्फ धनी वर्गों को बल्कि समाज के सभी सदस्यों को राजनीतिक और नागरिकता के अधिकार प्रदान करने पड़े। इन अधिकारों में संगठन बनाने और चुनावों में भाग लेना सम्मिलित था।

उदारवाद अनेक आर्थिक विचारधाराओं से संबंधित था। उदारवादी सभी लोगों को आर्थिक एजेंटों, उत्पादकों और वस्तुओं और सेवाओं के उपभोक्ताओं के रुप में समझते थे। ये इनको अपने व्यक्तित्वों के महत्वपूर्ण पहलुओं और व्यक्तियों की अभिव्यक्ति के रुप में मानते थे। परंतु उनके लिए मजदूर श्रेणी के लोग नहीं बल्कि लाभ कमाने वाले व्यापारी, दुकानदार और उत्पादक नायक थे। आर्थिक उदारवाद के मुख्य प्रवक्ताओं में एडमस्मिथ का कहना था कि यदि लोगों को उनके हित में काम करने की अनुमति दे दी जाए, तो ये सर्वसामान्य के हित के लिए योगदान करेंगे। यदि आर्थिक गतिविधि को स्वतंत्र रखा जाए, तो यह अपनी आपूर्ति व मांग के समीकरण बना लेती है और इससे समाज की स्थिति उपयुक्त बन जाती है। इन्होंने मुक्त व्यापार का समर्थन किया। इस प्रकार, अर्थव्यवस्था हेतु श्रेष्ठ सरकार वही है, जो नियंत्रण कम रखे और सब कुछ बाजार प्रचालन पर छोड़ दे।

1900 तक अनेक उदारवादियों ने यह सोचना शुरु कर दिया था कि सरकारों को समाज के गरीब वर्गों के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे कुछ कल्याणकारी कार्य प्रारंभ करके न्यूनतम हस्तक्षेप करना चाहिए। परन्तु इनके मौलिक विचार आज तक बाकी हैं। इन्होंने मुख्यतया धनी लोगों के हितों को बढ़ावा दिया। उदारवादियों को व्यावसायियों और शिक्षित लोगों से अपना मुख्य समर्थन मिलता था जो ऐसी परपरागत और निरंकुश व्यवस्था से असंतुष्ट थे जो जन्म के आधार (अर्थात कुलीन वर्ग) और व्यापार और औद्योगिक पूंजीपतियों को विशेषाधिकार प्रदान करती थी। इन्होंने कई ऐसे कामगार लोगों का समर्थन हासिल कर लिया था जो संविधानों और व्यक्ति के अधिकारों के बारे में इनके विचारों से सहमत थे, परन्तु ये लोग यह नहीं समझ पाए कि वे आर्थिक समानता अथवा कामगार लोगों के आर्थिक अधिकारों के प्रति बिल्कुल भी इच्छुक नहीं थे।

अनुदारवाद

अनुदारवाद मुख्यतः समाज के भूस्वामी और अन्य वर्गों से आया, जो अपने लिए लाभकारी विशेषाधिकारों को समाप्त करना और सीमित करना नहीं चाहते थे। ये भूस्वामी वर्गों के वे सौदागर और व्यापारी थे, जिन्हें राज्य संरक्षण और एकाधिकार प्राप्त थे जो मुक्त

आपकी टिप्पणियाँ

व्यापार नीतियों के कारण समाप्त हो गए थे। उनके लिए नैसर्गिक अधिकारों की संपूर्ण विचारधारा विघटनकारी थी क्योंकि इससे समाज में प्रचलित पुरानी व्यवस्था समाप्त हो गई थी जिसमें समाज के प्रत्येक वर्ग का अपना स्थान पहले से ही निर्धारित था। इनके लिए सामाजिक व्यवस्था और स्थिरता समानता से ज्यादा महत्वपूर्ण थी। इन्होंने महसूस किया कि भगवान के समक्ष सब बराबर हो सकते है परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि वास्तविक संसार में भी सब बराबर हो। ये उसे आधुनिक विश्व की अव्यवस्था के विरुद्ध पुरानी सामाजिक व्यवस्था को श्रेष्ठ सुरक्षा मानते थे, क्योंकि आधुनिक व्यवस्था से समाज में भारी परिवर्तन और संघर्ष उत्पन्न हो गया। सभी पश्चिमी राष्ट्रों में मजबूत अनुदार राजनीतिक समूह थे, जो चुनावों में भाग लेते थे और इनका प्रशासनिक तंत्र पर भी प्रभाव था।

समाजवाद

समाजवादी भी उदारवादियों की आलोचना करते थे, परन्तु उन बातों के लिए जो अनुदारवादियों से बहुत भिन्न थीं। समाजवादियों ने कामगार लोगों के हितों को प्रस्तुत किया और उनका मानना था कि औद्योगीकृत पूंजीवादी समाजों में राजतंत्र की पुरानी तानाशाही के जुल्म और अभिजात तंत्र का स्थान धनी पूंजीपति बुजुर्आओं ने ले लिया। लूई ब्लाँक और रॉबर्ट ओवेन जैसे कुछ पहले के समाजवादियों का मानना था कि उत्पादकों के सहयोग से लाभ में और अधिक समान भागीदारी होगी।

कार्ल मार्क्स जैसे अन्य समाजवादियों का मानना था कि श्रमिकों को पूंजीवादी प्रणाली में कभी उचित पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा। यह तभी संभव होगा जब सभी उद्यमों पर सार्वजनिक स्वामित्व हो अर्थात सबके समान लाभ हेतु उन पर राज्य का स्वामित्व हो। मार्क्स ने कहा कि साम्यवादी समाज में जब उत्पादन के सभी साधन सार्वजनिक होंगे और कोई निजी संपत्ति नहीं होगी, तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार योगदान देगा/देगी और उसकी आवश्यकताओं के अनुसार उसे प्राप्ति होगी। अतः सामाजिक न्याय के लिए निजी सम्पत्ति समाप्त करना आवश्यक था। समानता वाले समाज को अस्तित्व में लाने के लिए वर्गों को भी समाप्त करना होगा। मार्क्स के अनुसार समाजवादी आंदोलनों का अंतिम उद्देश्य ऐसे समाज की स्थापना करना है। मार्क्स ने यह भी कहा कि चूंकि शासन करने वाला वर्ग इसमें सहयोग नहीं देगा इसलिए क्रांति आवश्यक है। अतः साम्यवादी पार्टियाँ और मजबूत और समर्पित श्रमिक आंदोलन होने चाहिए।

अतः 1900 में सोशल डेमोक्रेटिक (मार्क्सवादी) पार्टी ने लाखों कामगारों को श्रमिक संघों, क्लबों और समितियों में संगठित किया, चुनावों में भाग लिया तथा रीशस्टेग (जर्मन संसद) में भारी सीटों पर विजय प्राप्त की। वे कामगारों के जीवन में सुधार लाने से संबंधित विधेयक पास कराने में सफल हो गए। 1900 तक विश्व के कई भागों में मार्क्सवादी, समाजवादी और लेबर पार्टियां अस्तित्व में आ गईं, हालाँकि वे सरकारों और अपने देशों की पुलिस की कड़ी निगरानी में थीं, क्योंकि सरकारें क्रांतियों को किसी भी कीमत पर रोकना चाहती थी। रुस जैसे राष्ट्रों में साम्यवादी संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया तथा जाने–माने साम्यवादियों को जेल में डाल दिया गया अथवा उन्हें देश निकाला दिया गया (जैसा कि रुसी क्रांतिकारी आंदोलन के नेता वी. आई. लेनिन के साथ हुआ)।

पाठगत प्रश्न 22.3

1. उदारवादियों द्वारा मान्यता प्राप्त 'नैसर्गिक अधिकार' कौन से थे?

2. उदारवादियों ने आर्थिक गतिविधि के सरकारी निर्धारण का सिद्धान्ततः विरोध क्यों किया?

3. उदारवाद और अनुदारवाद के संबंध में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बदलते वर्गों में बहस का उल्लेख कीजिए।

4. समानता की मार्क्सवादी अवधारणा और असमानता के आधार की मार्क्सवादी समझ को स्पष्ट कीजिए?

5. 1900 के एक ऐसे राष्ट्र का उदाहरण दीजिए जहां मार्क्सवादी कामगार वर्ग के लोगों को एकजुट करने में अत्यधिक सफल रहे?

6. साम्यवादी (मार्क्सवादी) साम्राज्यवाद के घोर विरोधी हैं। क्यों?

साम्राज्यवाद

1900 का विश्व ऐसा था जिसमें ज्यादातर औद्योगीकृत राष्ट्रों का गैर–औद्योगीकृत राष्ट्रों के लोगों और संसाधनों पर अधिकार था। औद्योगीकृत राष्ट्रों के कई निवासियों का मानना था कि जिन राष्ट्रों पर शासन किया जा रहा था उनके लिए उपनिवेशवाद लाभकारी था और 'पिछड़े' राष्ट्रों के निवासियों को विदेशी शासन द्वारा 'सभ्य' बनाया जा रहा था। शासक राष्ट्रों के उदारवादी इस बात पर बंटे हुए थे कि उपनिवेशों पर अपने राष्ट्रों के प्रभुत्व को कैसे बनाए रखा जाए। प्रत्येक यह नहीं सोचता था कि प्रत्यक्ष राजनीतिक शासन आवश्यक था परन्तु साथ भी उपनिवेशवाद के लाभों और उपनिवेशों के संसाधनों पर नियंत्रण खोने का भी इच्छुक नहीं था। जर्मनी में उदारवादियों का मानना था कि उनके राष्ट्र की औद्योगिक शक्ति अधिक उपनिवेश बनाने पर निर्भर थी। अमरीका के अनेक उदारवादियों का कहना था कि उनके राष्ट्र को क्यूबा और फिलिपींस पर राज्य करने का कोई नैतिक अधिकार नहीं था, परन्तु अमरीका के किसी भी नागरिक ने लातिन अमरीका में अपनी सरकार के हस्तक्षेप की आलोचना नहीं की। ब्रिटिश, फ्रांसीसी, जर्मन, बेल्जियम के और अमरीका के पूंजीपतियों ने औपचारिक साम्राज्यों की भीतरी औरबाह्य दोनों आर्थिक गतिविधियों पर भारी निवेश किया था। अतः इन्होंने अपने संबंधित देशों को समर्थन दिया और विदेशी–नीतियों को प्रभावित किया तथा शेष विश्व के राष्ट्रों पर औपनिवेशिक आधिपत्य जमाने के लिए प्रेरित किया। जिनमें अफ्रीका लातिन अमरीका और एशिया सम्मिलित थे।

आपकी टिप्पणियाँ

1900 में घोर साम्राज्यवाद–विरोधी विचारों वाला राजनीतिक समूह साम्यवादियों का था, उनका मानना था कि सब जगह उपनिवेशवाद सिर्फ शासक वर्गों को लाभ पहुंचाता था, और कहीं भी कामगार लोगों के हित में नहीं था। अतः सभी राष्ट्रों के कामगार वर्गों का कुछ राष्ट्रों के इस साम्राज्यवादी प्रभुत्व को उखाड़ फेंकने के लिए एकजुट होना आवश्यक था।

राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद और राष्ट्र–मुक्ति की विचारधारा उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दियों के विश्व में विस्फोटक शक्ति थी। 1900 में विश्व के सभी भागों में प्रतिस्पर्धी राष्ट्रवादी उन्नति कर रहे थे और लोगों को संघटित करने का यह महत्वपूर्ण ढंग था। सभ्यतागत पहचान की व्यापक धारणाएं लोगों का समर्थन हासिल करने के लिए राष्ट्रवाद से प्रतिस्पर्धा में थी। ये दोनों एशिया और अफ्रीका में महत्वपूर्ण थीं। पैन (सभी) अफ्रीकावाद और पैन–इस्लामवाद ने उपनिवेशों में स्वतंत्रता संग्राम को बढ़ावा दिया। चीनियों और भारतीयों ने अपनी सांस्कृतिक स्वतंत्रता पर बल दिया तथा स्वतंत्रता हेतु अपने संघर्ष में औपनिवेशिक नीतियों का विरोध किया। सरकार में जन प्रतिभागी राष्ट्रीय आंदोलनों का महत्त्वपूर्ण पक्ष था। साम्राज्यवादी राष्ट्रों की औपनिवेशिक नीतियों का विरोध करना, आर्थिक दोहन को समाप्त करना और स्वशासन, इन बातों ने समग्र विश्व के राष्ट्रीय उदारवादी आंदोलनों हेतु आधार तैयार किया। इस प्रकार बीसवीं शताब्दी के ज्यादातर राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष प्रजातंत्र से संबंधित विचारधाराओं और कैसे राष्ट्रीय सम्पत्ति सृजित की जाए और उसमें भागीदारी की जाए आदि से संबंधित विचारधाराओं से जुड़े थे।

इसके विपरीत, औद्योगीकृत, साम्राज्यवादी देशों में राष्ट्रवाद आक्रामक हो गया था तथा औपनिवेशिक नीतियों और अन्य राष्ट्रों पर प्रभुत्व के समर्थन में हो गया। अगली इकाइयों के अपने अध्ययन में आप देखेंगे कि इससे इन राष्ट्रों में प्रतिस्पर्धा और बढ़ी तथा अन्ततः प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हो गया।

आपने क्या सीखा

1900 से पूर्व की शताब्दी तीव्र जनसंख्या वृद्धि की अवधि थी, इसमें ज्यादातर वृद्धि यूरोप और उत्तरी अमरीका में हुई। इन स्थानों पर जनसंख्या वृद्धि औद्योगीकरण के साथ–साथ हुई। औद्योगिक समाज के आविर्भाव से अपेक्षित सामाजिक व्यवस्था प्राप्त करने संबंधी विचारों और सिद्धांतों अर्थात विचाराधाराओं का निर्माण और सुदृढ़ीकरण हुआ। 1900 तक साम्राज्यवाद से मुक्ति हेतु इन नीतियों से गैर–औद्योगिक समाजों के लोगों के संघर्षों को स्वरुप प्रदान करने के लिए विचारधाराएं बनने लगी थीं। उनका विकसित यूरोप तथा अविकसित औपनिवेशिक विश्व पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

पाठांत प्रश्न

1: औद्योगीकरण ने मानव अस्तित्व के प्राचीन ढांचों में किस प्रकार परिवर्तन किया?

2. औद्योगीकरण ने वैश्विक उत्पादन और व्यापार के ढांचों में किस प्रकार परिवर्तन किया?
3. उदारवाद और समाजवाद कैसे एक दूसरे के विरोधी थे, जबकि दोनों मानव स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते थे?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

22.1

1. 75–95 प्रतिशत
2. यूरोप के भीतर
3. शहरी क्षेत्र औद्योगिक उत्पादन और वाणिज्यिक वितरण के स्थल थे। साक्षरता ऐसे क्षेत्रों में अत्यधिक उपयोगी अथवा प्रासंगिक थी और ग्रामीण क्षेत्रों में कम उपयोगी थी।
4. प्राथमिक विद्यालयों में बड़ी संख्या में उपस्थिति तथा समाचार पत्रों का व्यापक प्रचलन।

22.2

1. ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, अमरीका कुछ राष्ट्र थे जो 1900 में जीवाश्म ईंधन पर निर्भर थे।
2. 1900 में जीवाश्म ईंधन की कई समृद्ध आपूर्तियां यूरोप और अमरीका से बाहर स्थित थीं।
3. उपनिवेश असमान व्यापार से दुखी थे। वे मुख्यतया औद्योगीकृत राष्ट्रों के लिए कम दाम का खाद्य और कच्चा माल उत्पन्न करते थे।
4. ज्यादातर लोग उनसे दूर रहने वाले लोगों के लिए खाद्यान्न उत्पन्न करते तथा दूसरों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की व्यापक मात्रा का उपभोग करते थे।
5. औपनिवेशिक शासकों ने नए सामाजिक भेदभाव सृजित करने तथा राष्ट्रीय जागरुकता के विकास में बाधा डालने के लिए भाषा और शिक्षा का उपयोग किया।

22.3

1. अत्याचार का विरोध, निजी सम्पत्ति, धर्म चुनने की स्वतंत्रता, बोलने तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सरकार में भागीदारी।
2. उदारवादियों का मानना था कि आर्थिक गतिविधि में अपने फायदे में लगे व्यक्ति शक्तिशाली नियामक प्राधिकरण (सरकार) से कहीं ज्यादा बेहतर ढंग से कार्य करेंगे।
3. 1900 के प्रारंभ में ज्यादातर अनुदारवादी भू–स्वामी वर्गों के सदस्य थे या उन पर निर्भर थे। जबकि उदारवादी अक्सर उत्पादन और वाणिज्य में सक्रिय रहते थे।

आपकी टिप्पणियाँ

1900 तक परम्परागत भू–स्वामी वर्गों के सदस्य उदारवादियों का समर्थन करने के लिए व्यापारी वर्ग से जुड़ गए, जबकि कुछ परम्परागत उदारवादी अनुदारवादियों की सहायता करते थे।

4. मार्क्सवादियों का मानना था कि मानव असमानता उत्पादन के साधनों तक पहुंच अथवा पहुंच की कमी के कारण थी। निजी सम्पति समाप्त करने तथा संसाधनों को राष्ट्र के नियंत्रण में रखने से लोग वास्तव में समान हो जाते।

5. जर्मनी जहां सोशल डेमोक्रेटिक वर्कर्स पार्टी ने कामगार वर्गों से ज्यादातर वोट प्राप्त किए।

6. समाजवादियों का मानना था कि पूंजीवादियों और श्रमजीवी वर्ग के बीच समाज का बँटवारा विश्व स्तर पर घट रहा था। अतः सभी राष्ट्रों/उपनिवेशों के श्रमजीवियों को दमनकारी पूंजीपतियों के विरुद्ध सर्वत्र संघर्षों में रुचि रखनी चाहिए।

पाठांत प्रश्नों हेतु संकेत

1. अनुच्छेद 22.1–22.4 देखें
2. अनुच्छेद 22.5 देखें
3. अनुच्छेद 22.6.2 और 22.6.4 देखें

शब्दावली

1. **बुर्जुआ** – सामाजिक वर्ग के ऐसे लोग जिनके पास घरों, फैक्टरियों के रुप में पर्याप्त सम्पत्ति थी अथवा बैंको में खाते थे – पूंजीपति।
2. **सी. ई** – सामान्य काल – ईसाई कैलेन्डरों के अनुसार निर्धारित ऐतिहासिक कालावधि इसमें ईसा मसीह के जन्म के बाद के वर्ष को एक वर्ष माना जाता है। अन्य धार्मिक परंपराओं (उदाहरण के लिए यहूदी धर्म, हिन्दू धर्म, इस्लाम) पर केन्द्रित सभ्यताआ और राष्ट्रों में अलग–अलग कैलेन्डरों का अनुसरण किया जाता था जबकि आज संपूर्ण विश्व में ईसाई कैलेंडर का व्यापक उपयोग किया जाता है। बीसवीं शताब्दी का अर्थ है 1900 से आरम्भ होने वाले वर्षों का समय।
3. **विचारधारा/आदर्श** – सिद्धांतों अथवा विचारों अथवा वैश्विक विचार का समूह जो समाज के विकास हेतु विशेष योजना का समर्थन करता है; सामाजिक दर्शन शास्त्र।

आपकी टिप्पणियाँ

4. साम्राज्यवाद – (1) मूल देश पर आश्रित उपनिवेशों, प्रदेशों का अधिग्रहण करने अथवा उनके रखरखाव करने की प्रक्रिया।

(2) साम्राज्य अधिग्रहण करने की विचारधारा

5. श्रमवाद/मजदूरदलवादी – कामगारों के राजनीतिक अथवा आर्थिक संगठनों का संकेत देते हैं। 'श्रमवाद' नियोक्ताओं अथवा राष्ट्र से श्रम अधिकारों की रक्षा करता है। कुछ मजदूर–दलों के समर्थक मार्क्सवादी हैं।

6. (छापे की) संस्कृति – मुद्रित पाठों जैसे पुस्तकों और समाचार पत्रों पर आधारित संचार और ज्ञान का ढांचा (जो लोगों द्वारा हाथ से पाठों की प्रतिलिपि करने के बजाय) यांत्रिक साधनों के माध्यम से तत्काल प्रतिकृति कर सकत हैं। छापे की संस्कृति साक्षरता, प्रतिलिपि बनाने और मुद्रण की सस्ती प्रौद्योगिकी पर निर्भरहै। यूरोप, जापान और कोरिया में 1500 सी. ई. में छापे की संस्कृति थी, जिसमें इन सभी स्थानों पर कम संख्या में पाठक थे। 1850 तक संपूर्ण विश्व के करोड़ों लोग प्रिंट संस्कृति से जुड़ गए थे जो ज्यादातर नगरों और शहरा में रहते थे। स्टॉक्स (सट्टा बाजार) की कीमत जानने के लिए समाचार पत्र पढ़ना और उपन्यास पढ़ना दोनों ही छापे की संस्कृति का व्यावहारिक अनुभव हैं।